RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष-12 वां अंक 46

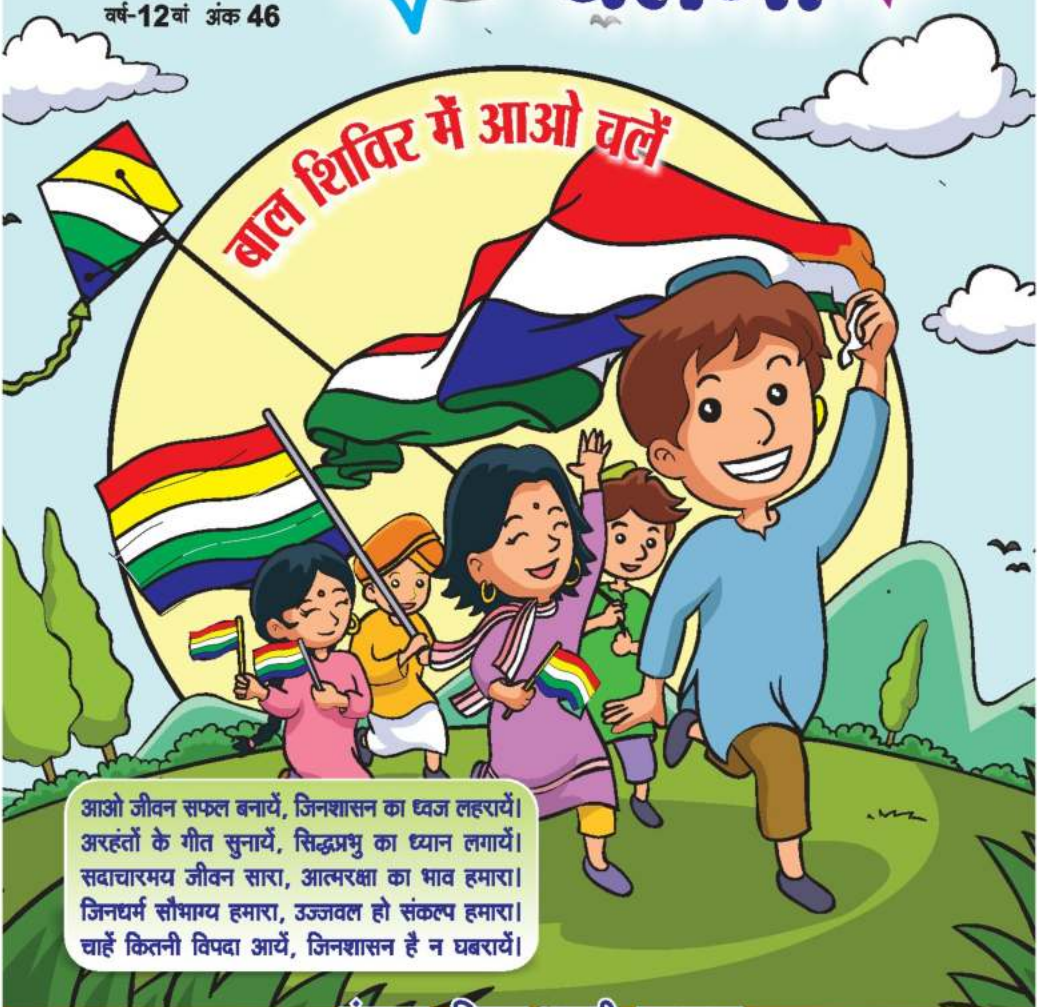

आओ जीवन सफल बनायें, जिनशासन का ध्वज लहरायें।
अरहंतों के गीत सुनायें, सिद्धप्रभु का ध्यान लगायें।
सदाचारमय जीवन सारा, आत्मरक्षा का भाव हमारा।
जिनधर्म सौभाग्य हमारा, उज्जवल हो संकल्प हमारा।
चाहें कितनी विपदा आयें, जिनशासन है न घबरायें।

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बाल वर्ग को तीन नवीन उपहार

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा निर्मित बालवर्ग धार्मिक संस्कार प्रेरक 27 वाँ पुष्प

माँ सुनाओ मुझे वो कहानी

आध्यात्मिक लोरी गीतों का अनुपम वीडियो संग्रह

वीडियो निर्माण में अर्थ सहयोगी

श्री ब्रजलाल दलीचन्दजी हथाया परिवार, ग्रांटरोड - मुम्बई
श्री भूपेन्द्र एच. शाह, मुम्बई श्री नरेश सिंघई, नागपुर
श्री सुरेन्द्र पाटोदी, कोलकाता, श्री साकेत कमल बड़जात्या, दादर, मुम्बई
श्री राजूभाई एम. शाह, दादर, मुम्बई श्रीमति नेहा संदेश जैन, जबलपुर
डॉ.एस.सी.जैन श्री निशांत जैन, जबलपुर, श्री विवेक डेवड़िया, नागपुर

निर्देशन
श्री विराग शास्त्री, जबलपुर

गीत रचना : ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना श्री विराग शास्त्री, जबलपुर श्री विमल जैन, छिन्दवाड़ा म.प्र.

बालवर्ग धार्मिक संस्कार प्रेरक 28वाँ पुष्प

हमारी प्यारी पाठशाला

शिक्षाप्रद कविताओं का अनुपम संकलन

(Animation Video)

काव्य रचना एवं
वीडियो परिकल्पना :
विराग शास्त्री
जबलपुर 9300642434

वीडियो निर्माण में अर्थ सहयोगी

श्री फतहलालजी जैन , मलाड, मुम्बई
श्री दिलीप सेठी, कोलकाता
श्रीमति शैली डॉ. रवीश जैन, सनावद म.प्र.
श्रीमति आरती प्रसंग जैन, खण्डवा

बालवर्ग धार्मिक संस्कार प्रेरक 29 वाँ पुष्प

जिनधर्म की डगर पे

जोड़ो, पढ़ो और सीखो (Collect, Read & Learn)

Puzzle Game

कहानी के साथ खेल के भी

मूल्य कम करने हेतु अर्थ सहयोग :
श्री आदर्श हर्षद भाई शाह, मुलुण्ड, मुम्बई, श्री सुरेन्द्र पाटोदी, कोलकाता

परिकल्पना : विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434

हमारे पास संस्था द्वारा निर्मित बाल संस्कार प्रेरक गीतों, कविताओं, पूजन, कहानियों, कम्प्यूटर गेम के अनेक वीडियो सीडी और साहित्य उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र. मचेबाइल : 9300642434
E-mail : kahansandesh@gmail.com | website : sarvodayasanskar.com | Youtube channel : sarvodayasanskar

मंगल अवसर

संस्कारों का बीजारोपण

भव्य शुभारम्भ

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, तीर्थधाम ज्ञानोदय, दीवानगंज, भोपाल के तत्वावधान में

मध्यप्रदेश की राजधानी में भोपाल – विदिशा हाईवे पर

श्री 1008 शीतलनाथ भगवान के चार कल्याणकों की पवित्र भूमि पर नवनिर्मित

तीर्थधाम ज्ञानोदय की धरा पर मध्यप्रदेश का प्रथम शास्त्री महाविद्यालय का भव्य शुभारम्भ

श्री ज्ञानोदय दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय

दीवानगंज, भोपाल

आप सभी साधर्मीजनों को सूचित करते हुये हम अत्यंत हर्षित हैं कि आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के द्वारा वीतराग जिनधर्म के पुण्य प्रभावना के मंगल योग में भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश की राजधानी में भोपाल – विदिशा हाईव पर निकट नवनिर्मित तीर्थधाम ज्ञानोदय के अंचल में इस वर्ष शास्त्री महाविद्यालय का मंगल शुभारम्भ होने जा रहा है। यह मध्यभारत का प्रथम शास्त्री महाविद्यालय होगा। यहाँ लौकिक अध्ययन के साथ मुख्य रूप जैन धर्म के मूल आधारभूत शास्त्रों के अध्ययन का विशेषज्ञ विद्वानों के मार्गदर्शन में सहज लाभ प्राप्त होगा। अत: आपसे निवेदन है कि अपने परिवार के, सम्बन्धियों अथवा नगर के दसवीं उत्तीर्ण छात्रों को इस नवीन विद्यालय में प्रवेश के लिये प्रेरित करें। छात्रों को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल / शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, भोपाल में लौकिक अध्ययन कराया जायेगा। इस वर्ष **प्राक् शास्त्री प्रथम वर्ष (कक्षा ग्यारहवीं)** में प्रवेश दिया जायेगा।

- दसवीं उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश
- प्रवेश साक्षात्कार द्वारा
- जैन धर्म के संस्कारों और शिक्षा के साथ लौकिक अध्ययन की उत्तम सुविधा
- आवास और भोजन की नि:शुल्क सुविधा
- प्राकृतिक सुरम्य वातावरण के मध्य अध्ययन के अनुकूल वातावरण
- श्रेष्ठ विद्वानों का निरन्तर सान्निध्य और लाभ
- आधुनिक शिक्षा के लिये कम्प्यूटर आदि की शिक्षा
- शैक्षणिक गतिविधियों के साथ शारीरिक विकास हेतु खेलकूद की समुचित व्यवस्था
- धार्मिक शिक्षा के साथ कुशल शिक्षकों के मार्गदर्शन में सरकारी उच्च पदों की शैक्षणिक तैयारी

प्रवेश शिविर आयोजन की तिथि : 20 जून से 30 जून 2018

प्रवेश फार्म भेजने की अंतिम तिथि : 30 अप्रेल 2018

विशेष जानकारी के लिये और प्रवेश हेतु संपर्क : 9406527501, 9819015707, 9993354533, 9425613096

Email : kund.kundkahanbhopal@gmail.com

बोलते चित्र

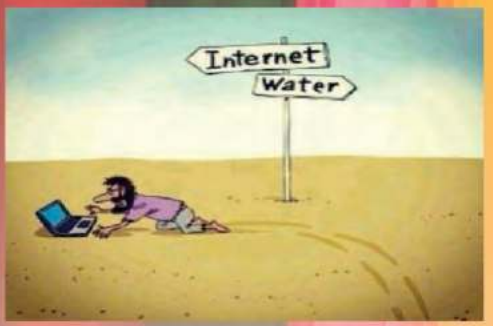

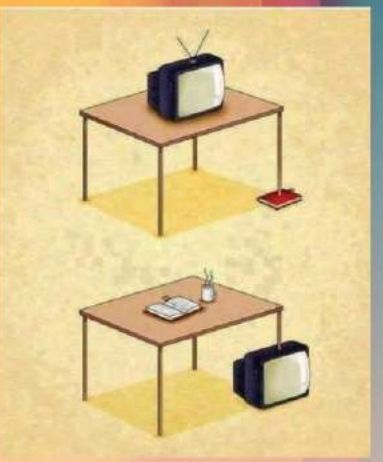

So much of our happiness depends on how we choose to look at the world.

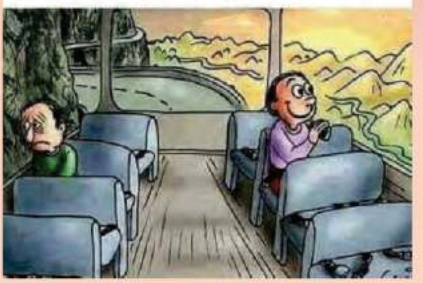

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्ज्वला शहा - पंडित दिनेश शहा, मुम्बई

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कानपुर

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	चेतना कलेण्डर विज्ञापन	2
3.	संपादकीय	3-4
4.	हुण्डावसर्पिणी काल...	5
5.	मक्का में जैन धर्म	6
6.	एक आदर्श व्यक्तित्व...	7
7.	संत गुरुदेव /लाल बहादुर शास्त्री	8
8.	शिव कुमार का वैराग्य	9
9.	देने का सुख	10
10.	दादी की चुप्पी	11-12
11.	प्रेरक प्रसंग	13
12.	रायबहादुर सुलतानसिंह	14
13.	कविता - श्रुत पंचमी	15
14.	जैनी बच्चा जाये कहां	16
15.	टाइम टेबिल	17
16.	कंस कौन	18
17.	धन की वासना	19-20
18.	आधुनिक तकनीक....	21-22
19.	जिनशासन की पहेलियां	23
20.	रियल एडवाइस/नेवर	24
21.	अब नहीं पहनाऊँगी	25-26
22.	समाचार	27-28
23.	अभक्ष्य चीजों के संदर्भ में सावधानी	29
24.	These companies Test on Animals	30
25.	जन्म दिवस	31
26.	चिल में बच्चों के जीवन	32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

जैन जगत की एकमात्र बाल युवा पत्रिका

चहकती चेतना

का वार्षिक केलेण्डर प्रकाशित

रंगीन वार्षिक तिथि कलेण्डर

1. अप्रेल 2018 से मार्च 2019 तक के महीनों पर आधारित
2. तीर्थंकरों के कल्याणक की तिथियाँ, समस्त धार्मिक पर्व
3. प्रासंगिक पर्वों के आधार से कविता और उनके अनुसार चित्र प्रकाशित
4. जैन धर्म सम्बन्धी धार्मिक एवं ऐतिहासिक बातों की जानकारी

प्रकाशन सहयोग

श्री प्रेमचन्द बजाज, कोटा, **श्री अजितप्रसादजी जैन**, दिल्ला
मुक्ति मंडल संघ हस्ते **डॉ. बासन्ती बेन** मुम्बई, **श्री देवेन्द्र जी बड़कुल**, भोपाल
श्री अशोकजी जैन, सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल, **श्री नयन शाह शास्त्री**, हैदराबाद
श्री ज्ञानोदय तीर्थ, भोपाल, **श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट**, देवलाली,
श्री वीतराग विज्ञान मण्डल ट्रस्ट, अजमेर हस्ते श्री नरेश लुहाड़िया
श्री ब्रजलालजी जैन मुम्बई, **श्री देवांग किरण गाला**, मुम्बई
गरजतो ज्ञायक परिवार हस्ते **पण्डित हितेशभाई चौवटिया**, मुम्बई,
सन्मति संस्कार संस्थान, कोटा हस्ते **पण्डित सिद्धार्थ दोशी** रतलाम

विशेष : चहकती चेतना के सभी सदस्यों को यह केलेण्डर मात्र पोस्टिंग शुल्क पर अथवा जबलपुर कार्यालय से लेने पर मात्र 20 अप्रेल 2018 तक निःशुल्क उपलब्ध हैं। सदस्यों के अतिरिक्त अन्य साधर्मियों को मात्र 20/- रु. के अल्प मूल्य पर उपलब्ध हैं। सभी के लिये यह सुविधा

संपादकीय

सस्ता होता मनुष्य जीवन और निजी भावनाओं का होता बाजारीकरण

हमने शास्त्रों में कई बार पढ़ा है और गुरूओं,विद्वानों के द्वारा सैकड़ों बार सुना है कि यह मनुष्य पर्याय महापुण्य से मिलती है। सैकड़ों जन्मों का पुण्य एकत्रित किया जाये तब जाकर एक बार मानव पर्याय मिलती है तो उसका उपयोग भी किसी महान कार्य के लिये होना चाहिये। लेकिन हर दिन होने वाली घटनायें और उसमें मरने वाले व्यक्ति इस दुर्लभ अवसर को व्यर्थ में गंवा रहे हैं।

सेल्फी लेने के चक्कर में दो युवाओं की पानी में डूबकर मौत, तेज गति से बाइक चला रहे युवा की एक्सीडेन्ट से मौत, परीक्षा का पेपर बिगड़ने से तनाव में आई छात्रा ने की आत्महत्या, मोबाइल न मिलने से बेटे ने आत्महत्या, पिता की डांट से नाराज बेटा कुयें में कूदा, मामूली झगड़े ने ली मासूमों की जान- जैसे अनेक समाचार हर दिन मन को आंदोलित कर रहे हैं। सेल्फी जैसे अनावश्यक कार्य के लिये लापरवाही करना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है। छोटी-छोटी बातों पर आत्महत्या का विचार करने वाले यदि यह सोचते हैं कि इससे वे दुःखों और समस्याओं से मुक्त हो जायेंगे तो वे बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। आत्महत्या जैसे महापाप करने वाले नरक जाकर वहाँ की भयंकर यातनायें भोगते हैं तब उन्हें वहाँ याद आयेगा कि इससे तो अनन्त गुनी कम समस्यायें मनुष्य गति में थीं।

अपने परिवार के हर प्रसंग, जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ, पिकनिक आदि ढ़ेरों प्रसंगों की फोटो का सोशल मीडिया में अपलोड करने के शौक ने परिवार को बाजार के बीच खड़ा कर दिया है। परिवार के निजी जीवन की हर जानकारी आज हर व्यक्ति के नजरों में है, पति-पत्नी और परिवार के निजी क्षणों की फोटो शील की सारी मर्यादायें भंग कर रहीं हैं। घरों में साड़ी पहनने वाली शालीन बहुयें बाहर जाकर जींस और टी-शर्ट में फोटो अपलोड अपने ही बच्चों और परिवार के सामने दोहरे आदर्श को स्थापित कर रहीं हैं। घर में बड़ों के सामने

पत्नी से शालीनता से बात करने वाले पति बाहर जाकर पत्नी की कमर और गले में हाथ डालकर फोटो खिंचाने में गौरव महसूस कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर स्कूल-कॉलेज पढ़ने वाले लड़कियाँ अपने दोस्तों के साथ गले में हाथ डालकर, खाते-पीते हुये दिख रहीं हैं। आप कह सकते हैं कि क्या महिलाओं को अपनी मर्जी से कपड़े पहनने का अधिकार नहीं है तो इसका उत्तर है-बिल्कुल है, लेकिन घर में सती सावित्री बनने वाली महिलायें फोटो को सार्वजनिक करके किस पारिवारिक दायित्व का निर्वाह कर रहीं हैं? इसमें दोष उनके पतियों का भी है। कोई इस सोच को पुरानी कहकर हंसी भी उड़ा सकता है। पर जब मर्यादाविहीन आजादी बुरी घटना के रूप में सामने आयेगी तब पछताने के सिवाय कुछ नहीं रहेगा। हमारे नीति शास्त्र और स्वयंभू वक्ता नारियों का सन्मान करने की प्रेरणा दे रहे हैं लेकिन इसके लिये नारियों को अपनी शालीन छबि को आदर्श बनाना होगा। हमारी आदर्श और सन्मान योग्य नारियाँ सीता, मनोवती जैसीं हो सकती हैं, अंग प्रदर्शन को अपना अधिकार मानने वाली..... नहीं। सामाजिक मर्यादाओं का पालन करना भी हम सबकी सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी है। किसी भी रूप में सामाजिक मर्यादाओं का भंग करना सामाजिक अपराध है, शासन भले ही इसका कोई दण्ड न दे परन्तु प्रकृति इसका दण्ड अवश्य देगी।

सोशल मीडिया का बढ़ता प्रयोग हमारे बच्चों को हमसे ही दूर कर रहा है। बच्चे अपने अभिभावक से बहुत बातें छुपाने लगे हैं। उन्हें माता-पिता से ज्यादा अपने दोस्तों पर भरोसा होने लगा है। सावधान ! आपके जीवन के हर पहलू पर कुछ खतरनाक लोगों की पैनी नजर है कहीं खुद को सार्वजनिक करने, थोड़े से लाइक्स और कमेन्ट्स का शौक जीवन का सबसे बुरा दिन लाकर दिखा दे..... विचारना।

हुण्डावसर्पिणी काल में होने वाली विशेष घटनायें

1- तीसरे काल में प्रथम तीर्थंकर का जन्म होना और उसी काल में मुक्त हो जाना।
2. प्रथम तीर्थंकर को पुत्रियों का जन्म होना।
3. प्रथम तीर्थंकर का अधिक समय राज्य अवस्था में व्यतीत होना।
4. प्रथम तीर्थंकर को वैराग्य उत्पन्न करने के लिये इन्द्र द्वारा निमित्त को उपस्थित कराना।
5. प्रथम तीर्थंकर को मुनि अवस्था में लम्बे समय तक आहार न मिलना।
6. प्रथम तीर्थंकर के सद्भाव में 363 मिथ्या मतों का प्रारम्भ होना और सभी तीर्थंकरों के काल में मिथ्यामत बने रहना।
7. प्रथम तीर्थंकर के साथ दीक्षित हुये 4000 मुनियों का पथ भ्रष्ट होना।
8. कुछ तीर्थंकरों का अयोध्या को छोड़कर विभिन्न स्थानों में जन्म होना।
9. तीर्थंकरों के शरीर की अवगाहना और आयु समकालीन अन्यजनों से कम होना।
10. आदिनाथ, शांतिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ तीर्थंकर के वंश में से पटरानियों का नरक जाना।
11. ब्रह्मदत्त और सुभौम चक्रवर्ती का नरक जाना।
12. अंतिम तीर्थंकर की दिव्यध्वनि लम्बे समय तक नहीं खिरना।
13. चक्रवर्ती द्वारा कामदेव की पराजय होना।
14. शलाका पुरुषों की संख्या में कमी होना।
15. चक्रवर्ती द्वारा अपने ही भाई पर चक्र चलाना।
16. सुभौम चक्रवर्ती द्वारा णमोकार महामंत्र का अपमान करना।
17. सातवें, तेईसवें और चौबीसवें तीर्थंकर पर मुनि अवस्था में उपसर्ग होना।
18. प्रथम तीर्थंकर के पहले अनन्तवीर्य और बाहुबली का मोक्ष जाना।
19. तीसरे काल में भोगभूमि होते हुये भी कल्पवृक्षों का लोप होना।
20. पाँच तीर्थंकरों का बाल ब्रह्मचारी होना।
21. महापुरुष बलभद्र रामचन्द्र जी को पत्नी की दीक्षा के बाद वैराग्य होना।
22. चतुर्थ काल में तेईस ही तीर्थंकरों का होना।

कुपोषण सभी जगह है,
कहीं आहार कम, कहीं संस्कार कम.....

मक्का में जैन धर्म

अरब देश में मक्का नाम का एक प्रसिद्ध नगर है । वहाँ ईसा मसीह के लगभग 500 वर्ष पूर्व हजरत मोहम्मद द्वारा इस्लाम धर्म की स्थापना हुई थी। इतिहास के प्राप्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि इससे पहले वहाँ जैन धर्म का अस्तित्व था।

महाकवि रत्नाकर विरचित कन्नड़ काव्य भरतेश वैभव लिखा है - मक्का में जब सम्राट भरत गया तो वहाँ के राजाओं ने भरत का भव्य स्वागत किया। भरत सम्राट ऋषभदेव के पुत्र थे। प्राचीन इतिहास के अनुसार हजरत मोहम्मद के पहले मक्का में जैन मंदिर था। मक्का में इस्लाम धर्म का प्रचार होने पर उन जैन मंदिरों की प्रतिमायें तोड़ दीं गईं और उन मंदिरों को मस्जिद बना दिया गया। इस समय वहाँ पर जो मस्जिदें हैं उनकी बनावट जैन मंदिरों के बावन चैत्यालयों के समान लगती हैं।

फरग्यूसन शिल्प शास्त्री ने विश्व की दृष्टि में पुस्तक के पृष्ठ 26 पर लिखा है - मक्का में मुहम्मद साहब के पहले जैन मंदिर विराजमान थे। किन्तु विपरीत वातावरण होने के कारण जैन वहाँ से चले गये। महुआ मधुपति के दूरदर्शी श्रावक मक्का से कुछ प्रतिमायें लेकर आये थे और उन्हें अपने नगर में विराजमान करवाईं थीं। जो आज भी वहाँ विराजमान हैं। मक्का की मस्जिदों की बनावट जैन मंदिरों जैसी है।

इस्लाम मूर्ति पूजक नहीं है वह मूर्ति विध्वंसक है। इसी सिद्धान्त के कारण भारत में मुहम्मद गौरी और औरंगजेब ने भारत में अपनी ताकत के बल पर हिन्दू मंदिरों और हिन्दू देवी-देवताओं की हजारों मूर्तियों को तोड़ दिया और उन मंदिरों को मस्जिद बना दिया। जैसे कि तालिबान (अफगानिस्तान) में महात्मा बुद्ध की 2000 वर्ष पुरानी प्रतिमा को तोड़कर गायों की बलि चढ़ाई गई।

- जैन दर्शनसार लेखक : आचार्य धर्मभूषण

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय संस्था की वेबसाइट निर्माण का प्रारंभ
शीघ्र ही आपको **website : sarvodayasanskar.com**
पर संस्था द्वारा प्रकाशित साहित्य, वीडियो गतिविधियाँ प्राप्त होगी ।
आप चहकती चेतना की सदस्यता भी वेबसाईट पर प्राप्त कर सकेंगे ।

एक आदर्श व्यक्तित्व

पण्डित गोपालदासजी बरैया

सन् 1923 में जन्मे पण्डित गोपालदास बरैया ने जिनशासन के प्रचार प्रसार के लिये बहुत कार्य किया है। पण्डितजी विद्वान तो अच्छे थे ही साथ ही वे उत्तम चारित्र के धनी थे । उन्होंने सत्य और किसी भी कार्य में चोरी न करने का प्रतिज्ञा की थी। इन नियमों के कारण उन्हें कई बार घाटा सहन करना पड़ा परन्तु उन्होंने जीवन भर अपनी प्रतिज्ञायें नहीं छोड़ीं।

एक बार बाजार में आग लग गई इससे पण्डितजी और अनेक व्यापारियों का माल जलकर राख हो गया। अधिकांश व्यापारियों का माल का बीमा (**Insurance**) था। दूसरे लोगों ने बीमा कम्पनियों से बहुत रुपया लिया, मायाचारी और झूठ बोलकर जितना माल जला उससे अधिक माल बताकर ज्यादा रुपये ले लिये। लोगों ने पण्डितजी को भी अधिक माल बताकर ज्यादा रुपये लेने की सलाह दी। परन्तु उन्होंने जले हुये माल से एक रुपया भी अधिक नहीं लिया।

रेल्वे और पोस्ट ऑफिस का यदि एक पैसा भी पण्डितजी के पास भूल से आ जाता था तो जब वह पैसा उन्हें वापस न कर दें तब उन्हें चैन नहीं पड़ती थी । रिश्वत न देने के कारण अनेक बार उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा परन्तु पण्डितजी उसे चुपचाप सहन करते थे।

जैन धर्म पर अगाध श्रद्धा -

पण्डितजी को जैन धर्म के सिद्धान्तों पर अटूट श्रद्धान था। एक बार उन्होंने जोश में आकर कहा कि यदि कोई पुरुष जैन धर्म के भूगोल को असत्य सिद्ध कर देगा तो मैं उसी दिन जैन धर्म का परित्याग कर दूँगा। उन्होंने कभी अपने विद्यालय के कोर्स में ऐसी कोई पुस्तक नहीं शामिल नहीं होने दी जो जैन धर्म के सिद्धान्तों से विरुद्ध हो। उन्हें अजैनों के संस्कृत ग्रन्थ काव्य, नाटक आदि भी पढ़ाना भी पसन्द नहीं था।

जिनशासन की पहेलियाँ - उत्तर

1. आत्मा के अनन्त गुण 2. तीन लोक 3. भरत क्षेत्र की चौबीसी के पंचकल्याणक 4. भगवान महावीर 5. मोक्ष और निगोद 6. तीन लोक और छः द्रव्य 7. आचार्य कुन्दकुन्द 8. पण्डित टोडरमलजी और उनका मोक्षमार्ग प्रकाशक 9. जम्बू द्वीप 10. मुनिराज

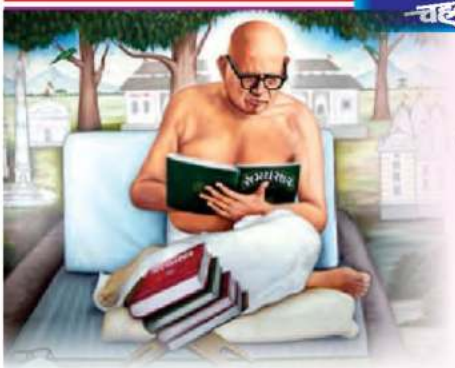

हमारे महापुरुष

संत गुरुदेवश्री कानजी स्वामी

गुजरात के प्रसिद्ध आध्यात्मिक संत गुरूदेवश्री कानजी स्वामी ने स्थानकवासी श्वेताम्बर सम्प्रदाय को त्यागकर दिगम्बर जैन धर्म स्वीकार किया। कानजी स्वामी श्वेताम्बर सम्प्रदाय के बहुत बड़े साधु थे। इस निर्णय से उन्हें श्रोताम्बर समाज का भयंकर विरोध सहन करना पड़ा। वे सत्य के पक्षपाती थे और स्पष्ट रूप से अपनी बात कहते थे।

कानजी स्वामी के छोटे भाई मगन का विवाह के एक वर्ष बाद ही देहावसान हो गया। मगन भाई ने मरण समय पंचपरमेष्ठी का स्मरण नहीं किया और आकुलतापूर्वक मरण हुआ। मगनभाई की पत्नी कानजी स्वामी से मिलने आई तब उन्होंने अत्यंत करुणापूर्वक कहा - अरे रे! मरते समय मगन को आत्मा की याद नहीं आई और उसका कुमरण हो गया। शरीर को याद करते-करते गया। कुमरण किया और अब फिर शरीर को धारण करेगा।

चूड़ा गांव में एक पुलिवाला भी कानजी स्वामी के प्रवचन सुनने आया। प्रवचन में सभी को उन्होंने आत्मसाधना करने और भगवान बनने की प्रेरणा दी। प्रवचन के बाद पुलिसवाले ने उनसे पूछा - साहिब! आपके बताये अनुसार सब भगवान बन जायें तो फिर संसार के काम कौन करेगा गुरुदेव ने जबाब दिया - करोड़पति बनने वाला यह नहीं सोचता कि यदि मैं करोड़पति बन जाऊँगा तो सड़क कौन साफ करेगा ?

जाने कहाँ ये गये लोग....

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री को एक बार परिवार के लिये चार-पाँच साड़ियों की आवश्यकता पड़ी। उसे लेने के लिये वे सरकारी गाड़ी में बाजार की एक दुकान में गये। दुकान मालिक शास्त्रीजी को अपनी दुकान में देखकर बहुत प्रसन्न हो गया और बहुत खुश हो गया। शास्त्रीजी ने उससे कुछ साड़ियाँ दिखाने के लिये कहा। दुकान के मैनेजर ने पाँच सौ और चार सौ वाली अनेक मंहगीं साड़ियाँ दिखाईं परन्तु शास्त्रीजी ने कहा भाई ! मुझे मंहगी साड़ियाँ नहीं, सस्ती साड़ियाँ दिखाईये। मैनेजर ने कहा - आपके लिये सब सस्ती ही हैं, जो पसन्द आये ले लीजिये। मेरा तो सौभाग्य है आप मेरी दुकान पर पधारे। शास्त्रीजी बोले - देखो भाई ! मुझे यह सब पसंद नहीं है। आप मुझे 25 से 30 रु. वाली सस्ती साड़ी दिखाईये । तब मैनेजर ने सस्ती साड़ी दिखाईं। उनमें से शास्त्री जी ने 5 साड़ियाँ लेकर उनका पूरा मूल्य चुकाकर घर गये। यह था लालबहादुर शास्त्री की सादगी और स्वाभिमानता ।

कथा सुनो पुराण की -

शिवकुमार का वैराग्य

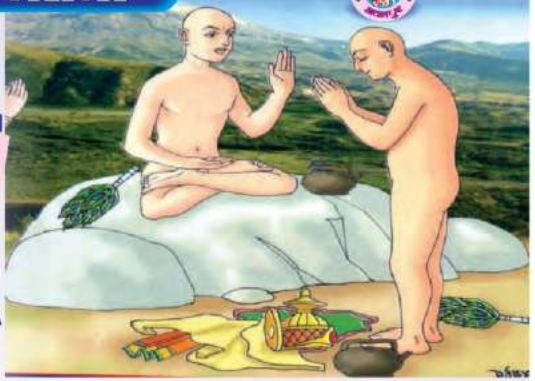

पूर्व विदेह के पुष्पकलावती देश में एक वीतशोकापुरी नाम का एक नगर है। वहाँ का चक्रवर्ती राजा महापद्म बहुत बलवान था। उसकी एक वनमाला नाम की रानी थी। कुछ समय बाद उसके एक पुत्र हुआ उसका नाम शिवकुमार रखा गया। शिवकुमार बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली था। जल्दी ही उसने व्याकरण, साहित्य आदि का गहन अध्ययन कर लिया। युवा होने पर शास्त्र विद्या, संगीत, नाटक आदि अनेक विद्याओं में निपुण हो गया। शिवकुमार प्रतिदिन जिनमंदिर जाकर जिनेन्द्र पूजन करता था साथ षट्आवश्यक का पालन करता था। युवा अवस्था होने पर पिता राजा पद्म ने शिवकुमार का विवाह पाँच सौ कन्याओं के साथ कर दिया।

एक दिन शिवकुमार ऋद्धिधारी मुनिराज के पास गये। मुनिराज ने उपदेश से शिवकुमार को पूर्व भव का स्मरण हो गया और इन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। घर पर वे उदास रहने लगे और स्वाध्याय और सामायिक में समय का सदुपयोग करने लगे। पिता ने उदास रहने का कारण पूछा तो शिवकुमार बोले - हे पिताश्री ! अब मैं अनन्त सुख देने वाली जैनेश्वरी दीक्षा लेना चाहता हूँ। कृपया मुनि बनने की आज्ञा प्रदान करें। पिता यह सुनकर दुःखी हो गये और शिवकुमार से कहा - जैसे तुम सभी प्राणियों पर दया कर रहे हो वैसे ही मुझ पर एक दया करो। तुम घर में एकान्त स्थान पर रहकर श्रावक के व्रतों का पालन करो।

पिता का अतिआग्रह देखकर शिवकुमार सोचने लगे - यह कैसा संकट है.. एक ओर महादुर्लभ मनुष्य पर्याय सार्थक करने की भावना है और दूसरी पिता का मेरे प्रति राग। बहुत विचार करने के बाद शिवकुमार पिता की आज्ञा स्वीकार घर में ही रहकर श्रावक के व्रतों का पालन करने लगे। निरन्तर सामायिक और स्वाध्याय में समय निकलने लगा। रानियों से विरक्ति हो गई और ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे। कभी एक उपवास, कभी दो उपवास तो कभी 15 दिन तो कभी एक माह का उपवास करते। इस तरह घर में उग्र तप करते हुये कई वर्ष बीत गये। बाद में आयु के अंतिम समय में मुनि दीक्षा अंगीकार चारों प्रकार का आहार त्याग किया और कुछ समय बाद देह का भी त्याग कर देव पर्याय धारण की। इसके बाद वे पुनः मनुष्य जन्म लेकर नियम से मोक्ष जायेंगे।

दादी की चुप्पी

कई दिन से दादी उदास रहने लगीं थीं। किसी की समझ में ही नहीं आ रहा था कि सबसे हंसकर बात करने वाली दादी आखिर चुप-चुप क्यों रहने लगीं हैं। उनका यह व्यवहार लगभग 7 दिन से ऐसा दिख रहा था, दादी की दोनों बेटियों के चारों बच्चे गर्मी की छुट्टियों में उनके घर पर रहने आये थे। बच्चे सुबह से लेकर रात तक खाते-पीते, खूब बातें करते, टीवी देखते, मोबाइल पर गेम खेलते और कहीं बाहर घूमने चले जाते और जब रात में बहुत थक जाते तो गहरी नींद में सो जाते। मगर दादी की चुप्पी सबको परेशान कर रही थी।

आखिर उनके बेटे विनय ने दादी से पूछ ही लिया - माँ! आपकी तबियत खराब है क्या? दादी बोली- नहीं। तो फिर ऐसी क्या बात हो गई कि आपने बात करना इतना कम कर दिया है और चुप-चुप रहती हो - विनय ने पूछा । दादी उदास होकर बोली - देखो विनय! ये बच्चे साल भर तो स्कूल की पढ़ाई में व्यस्त रहते हैं और अब छुट्टियाँ हुईं हैं तो बस खेलकूद, टीवी देखना, घूमना और खाना। न तो बच्चों में मंदिर जाने के संस्कार हैं, न बड़ों से जय जिनेन्द्र कहने की समझ। इन छुट्टियों में तो मंदिर जायें, पाठशाला जायें, बड़ों की विनय सीखें। पर किसी को कोई मतलब नहीं है।

विनय दादी का हाथ पकड़कर बोला - माँ! इतनी सी बात। मैं अभी बच्चों को बुलाता हूँ और आप उन्हें समझाइये और मैं भी आपके साथ हूँ।

सभी बच्चों को बुलाया गया। फिर दादी सबको समझाते हुये बोली - बच्चो! आप जानते हो कि इस समय में विश्व में कुल कितनी जनसंख्या है? लब्धि बोली - दादी! 7 अरब। दादी बोली - बिल्कुल सही। अब ये बताओ कि इसमें जैन कितने होंगे? किसी भी बच्चे से उत्तर न पाकर दादी स्वयं बोली - एक अनुमान के अनुसार लगभग 80 लाख और इन 80 लाख में से बच्चे कितने होंगे ? सभी बच्चे एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

मेरे कहने का मतलब यह है कि हमें यह महान जैन धर्म बहुत भाग्य से मिला है। हमें अपने जैन धर्म के बारे में जानना चाहिये, उसको समझना चाहिये। जैन धर्म के सिद्धान्तों को समझने वाला भगवान भी बन सकता है और तुम सब छुट्टियों का पूरा समय धमाल करने में लगा रहे हो - दादी ने समझाते हुये कहा।

आगम बोला - हाँ दादी! आप सच कह रही हैं...।

आप खेलो और मस्ती भी करो, पर थोड़ा समय जैनधर्म को जानने, जिनमंदिर में देना चाहिये। सुबह से उठकर सीधे दूध - नाश्ता नहीं, पहले जिनमंदिर जाना चाहिये और उसके बाद दूध-नाश्ता।

अनय खुश होकर बोला - प्रॉमिस दादी। अब कल से पहले मंदिर पूजा फिर पेट पूजा। सभी जोर-जोर से हंसने लगे।

और हाँ! सुबह पहले उठकर सबसे पहले णमोकार मंत्र से पंच परमेष्ठी भगवान को याद करना उसके बाद सबसे जय जिनेन्द्र।

आज्ञा हाथ हिलाकर बोली - दादी! ये पंच परमेष्ठी कौन हैं ?

दादी ने गंभीर होकर कहा - फिल्मों के एक्टर और सारे कॉर्टून के नाम याद हैं पर पंचपरमेष्ठी के नाम नहीं पता। आज से मैं रोज शाम को एक घंटा पाठशाला में सब बताऊँगी। आप सब पढ़ोगे या नहीं ?

जरूर दादी। हम सब जरूर आपसे पढ़ेंगे और अपने महान जैनधर्म को जानेंगे। संयम खड़े होकर बोला।

अब दादी बहुत प्रसन्न दिख रहीं थीं।

तृष्णा

जो दस बीस पचास भये सत्, होत हजार तो लाख चहेगी।
कोटी, अरब, खरब, असंख्य की, प्रतिपति होने की चाह जगेगी।
स्वर्ग - पाताल का राज्य करो, तृष्णा अघ की आग लगेगी।
सुन्दर एक सन्तोष बिना, तेरी तो भूख कभी न भगेगी।
- पण्डित बनारसीदासजी

जब मनुष्य के पास दस-बीस या पचास रुपये आ जाते हैं तब हजार या लाख होने की इच्छा जाग जाती है, फिर हजार-लाख भी हो जायें तो करोड़, अरब-खरब होने की इच्छा हो जाती है। दूसरे शब्दों में इच्छायें मृगतृष्णा के समान हैं, जो कभी समाप्त नहीं होती चाहे तीनों लोकों की सम्पदा भी मिल जाये फिर भी तृष्णा रूपी आग नहीं बुझेगी। अतः जो जीव संतोष रहित है उसकी तृष्णा की भूख कभी समाप्त नहीं होगी। इसलिये संतोष धारण करना ही सुन्दर है अर्थात् सुखी होने का उपाय है।

बाईस प्रकार के अभक्ष्य

1. ओला (बारिश में गिरने वाला बर्फ) 2.दही बड़ा (कच्चे पक्के दूध के साथ बेसन का बडा) 3.रात्रि भोजन 4. बहुबीजा अनाज 5. बैंगन 6. अचार मुरब्बा (चौबीस घण्टे बाद का) 7. बड़ फल 8.पीपल फल 9.पाकर 10. कठूमर (अंजीर) 11.गूलर 12. अजान फल (जिस फल के बारे में जानकारी न हो) 13.कन्द (आलू, गाजर, मूली आदि जमीन के अन्दर होने वाली सब्जी-फल) 14. मिट्टी 15. विष 16. आमिष (मांस) 17. शहद 18. मक्खन 19. शराब 20. अतितुच्छ (जिसमें बीज नहीं पड़े हों ऐसे बहुत छोटे और कच्चे फल) 21.बर्फ 22.चलित रस (जिनका स्वाद बिगड़ गया ऐसे दूध, जूस आदि) ये सब अभक्ष्य पदार्थ हैं। इनको खाने से बचना चाहिये।

जीवन को उपयोगी बनाइये....

यदि हमारा जीवन 70 वर्ष का हो तो...70 वर्ष में कुल 6,13,200 घंटे का जीवन हुआ। एक अनुमान के अनुसार---

25 वर्ष सोयेंगे, 10 वर्ष पढेंगे, 4 वर्ष बीमारी में आराम, 5 वर्ष आवागमन में, 2 वर्ष भोजन में, 3 वर्ष अन्य कार्यों में चले जाते हैं। शेष बचे मात्र 11 वर्ष ये आपके अपने लिये है। आप चाहें तो विषय भोग या सांसारिक सम्बन्धों में व्यतीत करिये या आत्मकल्याण के कार्यों में। यह पर्याय बीत गई तो फिर न जाने कब यह दुर्लभ मनुष्य पर्याय मिलेगी, और मनुष्य पर्याय मिल भी गई तो जैन कुल, जिनेन्द्र दर्शन, जिनवाणी का लाभ पता नहीं मिले या न मिले यह तो अतिदुर्लभ है। विचार करिये.....

हमारे महापुरुष

रायबहादुर सुलतानसिंह

जैन शासन की उन्नति और उसके प्रचार-प्रसार में अनेक महापुरुषों ने अपनी योग्यता और क्षमतानुसार विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दिया है। इन्हीं महापुरुषों के द्वारा किये गये कार्यों से जैन समाज का वैभव हमें इतने समृद्ध रूप में प्राप्त है। इन महापुरुषों में एक थे राय बहादुर सुलतानसिंह।

हरियाणा के सोनीपत नगर के निवासी रायबहादुरजी बहुत धनवान जैन परिवार से थे। इनका जन्म 1876 में हुआ। पिता की जल्दी मृत्यु हो जाने पर इनके दादाजी ने इन्हें पाला और जल्द ही इन्होंने अपने परिवार का कारोबार संभाल लिया। अपनी विशिष्ट प्रतिभा से ये 1905 में आननेरी मजिस्ट्रेट, 1910 में पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य और रायबहादुर हो गये। अंग्रेज शासक इनका बहुत सन्मान करते थे। इसके बाद भी सच्चे देशभक्त और कांग्रेस पार्टी के अनुशासित सदस्य थे। इनके घर पर वायसराय, चीफ कमिश्नर, राजे-महाराजे आदि अतिथि होते थे। स्वयं महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरु, सरोजिनी नायडू जैसे नेता भी इनके घर पर ही रुकते थे। अंग्रेज इन्हें **"किंग ऑफ काश्मीरी गेट"** कहते थे।

इतना विपुल वैभव और सन्मान होने के बाद भी सुलतानसिंह को जिनधर्म से बहुत लगाव था। सन् 1900 में इन्होंने 400 यात्रियों की तीर्थयात्रा का आयोजन किया था। सन् 1923 में दिल्ली के जिनमंदिर की प्रतिष्ठा में इनका विशेष योगदान था। जिनधर्म के आयोजनों में वे प्रसन्न हृदय से दान दिया करते थे। इन्होंने अनेक शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षा के लिये भरपूर सहयोग दिया। इनकी पत्नी श्रीमति सुशीला देवी ने आजादी के आंदोलनों में सक्रियता से भाग लिया, पुलिस की लाठियों की मार खाई, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्ष रहीं।

इस तरह सामाजिक कार्यों के साथ जैन धर्म के प्रचार में इनका विशेष योगदान रहा। बाद में इनके पुत्र रघुवीर सिंह ने अपने पिता के कार्यों को आगे बढ़ाया।

कविता

श्रुतपंचमी

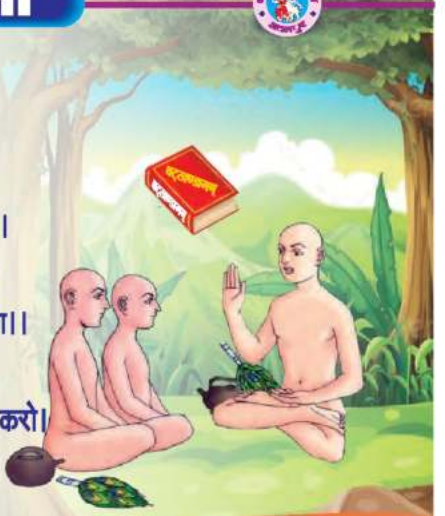

श्री धरसेनाचार्य गुरु को, श्रुत रक्षा का भाव जगा।
पुष्पदंत और भूतबलि को, जिन आगम का ज्ञान दिया।।
जिनवाणी लिपिबद्ध हुई तब, षट्खण्डागम ग्रन्थ रचा।
प्रथम ग्रन्थ है जिनशासन का, भवि जीवों का भाग जगा।।
श्रुतपंचमी दिन था पावन, जिनवाणी को नमन करो।
इसके अध्ययन अरु चिन्तन से, निज आतम कल्याण करो।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

ब्रेड

पापुलर ब्रेड हूँ बताने आया हूँ।
पाप न हो तुमको समझाने आया हूँ।।
सड़ी गली मैदा से बनाया जाता है।
इल्लियाँ भी मरतीं हैं, दया कौन करता है ?
अंडों का भी अंश मुझमें डाला जाता है।
क्या-क्या गंदा डाला कौन जांच करता है।।
सादा जीवन जीना भाई जिनधर्म पाया है।
घर का शुद्ध भोजन सबको स्वस्थ रखता है।।

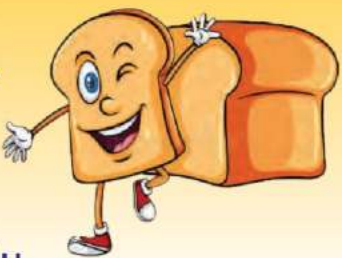

पेप्सी का कहना

(आतम ध्याना आतम ध्याना आतम में रम जाना)
फूटी कोल्ड ड्रिंक पेप्सी कोला कभी नहीं पीना।
अनछने पानी से बनता है फिर इसको क्यों पीना।।
टॉयलेट क्लीनर कहलाता है फिर इसको क्यों पीते,
मुझको पीने वाले जीव नरकगति में जाते।
घर का बना जूस शिंकजी शरबत ही है पीना,
अब तुम दृढ़ निश्चय यह करलो मुझे कभी न छूना।।

- पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर

जैनी बच्चा जाये कहाँ

जैन जगत की एकमात्र बाल युवा पत्रिका

चहकती चेतना

Time / period	Monday	Tuesday	Wednesday	Thursday	Friday	Saturday

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र. मचेबाइल : 9300642434 E-mail : kahansandesh@gmail.com | website : sarvodayasanskar.com | Youtube channel : sarvodayasanskar

कथा सुनो पुराण की -

कंस कौन ?

एक बार राजा उग्रसेन ने घोषणा करवा दी कि नगर में कोई भी दिगम्बर साधु आयेगा तो उनके अतिरिक्त कोई अन्य मुनिराज के आहार के लिये चौका नहीं लगायेगा। कुछ समय बाद एक मुनिराज नगर में पधारे। उनका एक माह से उपवास चल रहा था, आहार लेने के भाव से वे नगर में आये परन्तु कोई भी चौका नहीं देखकर वे वन में वापस लौट गये। राजा उग्रसेन समय पर चौका नहीं लगा पाया वह मुनिराज की आहार चर्या का समय ही भूल गया।

एक माह बाद पुनः मुनिराज आहार के लिये नगर पधारे। मुनिराज का दो माह का उपवास हो गया था। राजा की आज्ञा के डर से नगर में किसी ने भी मुनिराज के लिये चौका नहीं लगाया और राजा फिर चौका लगाना भूल गये। मुनिराज नगर से बिना आहार लिये वापस लौट गये। पुनः एक माह के उपवास के बाद वे नगर में आहार लेने के लिये आये। तीन माह के लगातार उपवास के बाद मुनिराज बहुत कमजोर हो गये थे। शरीर की सारी नसें दिखने लगीं थीं, दुर्बलता के कारण उनसे ठीक से चला भी नहीं जा रहा था। राजा इस बार भी राज्य के अन्य कार्यों में व्यस्त होने के कारण चौका लगाना भूल गया। आहार न मिलने पर मुनिराज वापस लौटने लगे। नगरवासी मुनिराज को आहार न मिलने के कारण बहुत दुःखी हुये और चर्चा करने लगे कि यह राजा बहुत पापी है। न स्वयं चौका लगाता है और न हमें चौका लगाने देता है। ये शब्द मुनिराज ने सुन लिये और उनके परिणाम बिगड़ गये। वे वहीं बेहोश होकर गिर गये। जैसे ही होश में आये तो उन्होंने निदान बन्ध किया कि मैं इस राजा से बदला लूँगा। यह सोचते हुये उनका मरण हो गया। वह मुनिराज का जीव मरकर राजा उग्रसेन के घर में कंस के रूप में पैदा हुआ और युवा होकर अपने ही पिता उग्रसेन को जेल में बन्द कर दिया।

पारिवारिक सम्बन्धो पर भारी पड़ती

धन की वासना

समय ! तुम बड़े होकर क्या बनोगे - अभिलाषा ने अपने चार वर्ष के भतीजे से पूछा।

समय तुरन्त बोला - मैं बड़े होकर डॉक्टर बनूँगा।

वाह बेटा ! तुम तो बहुत अच्छी बात करने लगे हो।

हाँ दीदी ! मेरा बेटा डॉक्टर भी बनेगा और बहुत रुपये भी कमायेगा। समय की माँ पूर्ति ने खुश होकर समय के सिर पर हाथ फेरते हुये कहा।

यह वह संवाद है जो आज लगभग हर घर में बच्चों के साथ हो रहा है। हम बच्चों के चरित्रवान, संस्कारवान, विनयवान होने की अपेक्षा के पहले अधिक धन कमाने की अपेक्षा रखते हैं। यदि हमारे बच्चे गुणवान होंगे तो धन तो आयेगा ही। यदि किसी कारणवश अधिक धन न भी आया तो कम से कम धन न होने पर भी परिवार में शांति बनी रहेगी। परन्तु बिना संस्कारों के कमाया हुआ धन निःसन्देह दुःख का ही कारण बनेगा।

पहले शिक्षा जीवन के सौन्दर्य के लिये होती थी आज शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य होता है अधिक धन कैसे कमाया जाये इसलिये आज के बच्चे थोड़ी सी असफलता मिलने पर ही आत्महत्या जैसे खतरनाक कदम उठा रहे हैं। विशाल जीवन की थोड़ी सी असफलतायें उन्हें सम्पूर्ण जीवन से निराश कर देतीं हैं इसका कारण एकमात्र यह है कि बच्चों में संस्कारों और आत्मबल का अभाव।

कुछ दिन पूर्व ही घटित घटना ने पूरे देश को सोचने पर मजबूर कर दिया कि हमारा समाज किस पतन की ओर जा रहा है? 31 जनवरी को सुबह 6.30 बजे छत्तीसगढ़ के दुर्ग शहर के प्रसिद्ध समाजसेवी और विख्यात नगपुरा श्वेताम्बर तीर्थ के संस्थापक श्री रावतमल जैन और उनकी पत्नी सुरजीदेवी को उनके ही बेटे संदीप ने गोली मारकर हत्या कर दी। रावतमलजी के सामाजिक प्रतिष्ठा का इस बात से अनुमान किया जा सकता है कि 31 जनवरी को शाम को ही रावतमलजी का सामाजिक योगदान के लिये जैन समाज के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री रमनसिंह के द्वारा अभिनन्दन किया जाने वाला था। दुःखद बात यह रही कि शाम को मुख्यमंत्री को उनके अंतिम संस्कार में शामिल होना

पड़ा। रावतमलजी सामाजिक सेवा के कार्य के साथ लेखन का कार्य भी करते थे। उन्होंने धर्म और समाज के अनेक विषयों पर 108 पुस्तकें भी लिखीं थीं। परन्तु वे अपने ही बेटे को संस्कारित नहीं कर पाये और संदीप के दुर्व्यसनों के कारण बढ़ती रुपयों की भूख उनकी हत्या का कारण बन गया। समाज में धन प्रदर्शन की होड़, भौतिकता की चकाचौंध, होटलों में खान-पान, अभक्ष्य भक्षण, पारिवारिक मर्यादाओं का टूटना इसका बड़ा कारण है। हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा, अच्छा खान-पान, अच्छा रहन-सहन तो उपलब्ध कराते हैं परन्तु अच्छे संस्कारों की परवाह नहीं करते या इसके लिये उचित प्रयास नहीं करते। जरा सोचिये हम कोचिंग / ट्यूशन में जाने के लिये जितना बच्चों को प्रेरित करते हैं क्या ही उतनी प्रेरणा जिनमंदिर भेजने के लिये करते हैं....? हम दिन में कई बार बच्चों को पढ़ने के लिये कहते हैं तो उसकी अपेक्षा कितनी बार हम संस्कारों या अपने जिनधर्म के सिद्धान्तों को समझाने का प्रयास करते हैं...?

ध्यान रखिये ! हमारे बच्चों और परिवार में सुख शांति धन से नहीं, संस्कारों से आयेगी। धन तो पुण्य उदय से जितना आना होगा वह तो आयेगा पर धन का सुदपयोग संस्कारों पर निर्भर है। विचारें .....

- विराग शास्त्री, जबलपुर

जय जिनेन्द्र का इतिहास

आज से लगभग 175 वर्ष पूर्व वि.स. 1884 में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी दिन मंगलवार को अनेक पूजनों के रचनाकार कविवर पं. वृन्दावनदास जी ने काशी से दीवान अमरचन्दजी को जयपुर पत्र लिखा था। इसमें इन्होंने पत्र के प्रारम्भ में दीवान साहब को 'जय जिनेन्द्र' कहकर सम्बोधित किया है।

वृन्दावन विलास में लिखा है - वृन्दावन तुमको कहत है श्रीमत जयति जिनन्द।
काशीतैं सो बांचियो, अमरचन्द सुखकन्द ।।

और इतना ही नहीं, अन्त में पुनः ऋषभदास, घासीराम आदि समाज के अन्य प्रमुख पंच लोगों को भी जय जिनेन्द्र कहकर ही ही अभिवादन किया है।

वृन्दावन विलास में लिखा है -

ऋषभदास पुनि घासीराम और पंच ने सुगुन निधान।
बिगति बिगति श्री जयति जिनन्द, कहियों सबसौं धरि आनन्द ।।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान में जैन समाज में पारस्परिक अभिवादन हेतु 'जय जिनेन्द्र' कहने की जो परम्परा है, वह कोई नई परिपाटी नहीं है, अपितु कम से कम से दोसौ वर्ष प्राचीन है।

- डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली

एक जनश्रुति यह भी है कि सर्वप्रथम आचार्य भद्रबाहु ने अभिवादन में 'जयजिनेन्द्र' कहने की प्रेरणा दी थी।

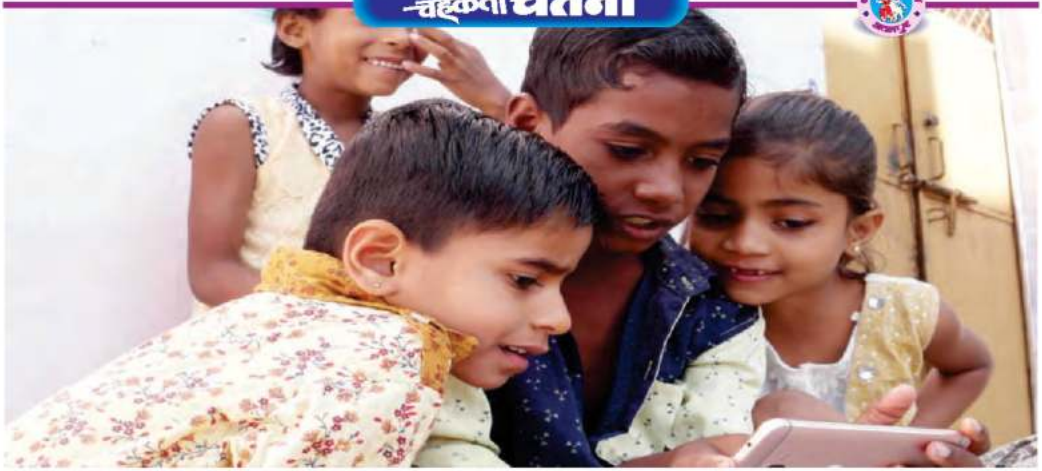

टच स्क्रीन मोबाइल से खेलने वाले 3 वर्ष तक के 58 प्रतिशत बच्चों को ग्रिप कमजोर पेंसिल पकड़ने में हो रही दिक्कत

आधुनिक तकनीक बन रही अभिशाप

आधुनिक सुविधायें जीवन को आसान बनाने के लिये होतीं हैं, परन्तु यही सुविधायें जीवन के लिये ही संकट बन जायें तो ऐसी सुविधाओं का उपयोग विवेकपूर्वक करना चाहिये। मोबाइल, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यू ट्यूब जैसे साधन आज अवसाद पैदा कर रहे हैं। यह समस्या भारत की ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की होती जा रही है।

आजकल मोबाइल के बढ़ते प्रयोग से छोटे-छोटे बच्चे भी प्रभावित हो रहे हैं। इंग्लैण्ड की संस्था नेशनल हैंडराइटिंग एसोशिएशन के अनुसार ''बच्चे अब जन्म के कुछ माह बाद ही मोबाइल से परिचित हो जाते हैं। अभिभावक भी बच्चों को दिल बहलाने के लिये मोबाइल का अनेक प्रकार से उपयोग करते हैं। बच्चे 2 वर्ष के होते ही मोबाइल में गेम खेलने लगते हैं और आउटडोर एक्टीविटी फुटबाल, बालीवॉल, दौड़ जैसे खेलों से दूर हो रहे हैं। यह समस्या इतनी खतरनाक हो रही है लगातार टच स्क्रीन का प्रयोग करने के कारण हाथों की मांसपेशियां कमजोर हो रहीं हैं और उन्हें पेंसिल में ग्रिप बनाने में समस्या हो रही है। इन्हें ड्रांइग करने में समस्या आ रही है। इन बच्चों को टचस्क्रीन जेनरेशन नाम दिया गया है।'' यह लत इतनी बढ़ रही है कि बच्चे मोबाइल छीनते ही अजीब सा व्यवहार करने लगते हैं। मातायें भी समझाने के बजाय और उनके रोने से डरकर मोबाइल देना ही आसान उपाय समझती हैं। अभी देश और विदेश में अनेक बच्चे इस समस्या के कारण फिजियाथेरेपी ले रहे हैं।

ब्रिटेन की संस्था एन.एस.पी.सी.सी. की एक रिपोर्ट के अनुसार 11 से 18 वर्ष के किशोर बच्चों में 14 प्रतिशत डिप्रेशन और आत्महत्या के मामले बढ़ गये हैं। इन सोशल साइट्स की लत इतनी खराब है कि बच्चे अपने ही परिवार से दूर हो जाते हैं और डिप्रेशन में

चले जाते हैं। इससे बचने के लिये नींद की गोलियाँ लेना, हाथ की नस काटना, खुद को आग लगा लेना जैसी घटनायें होने लगीं हैं। सेल्फी ने लोगों की चेहरे की मुद्रायें बिगाड़ दीं हैं। सेल्फी का शौक युवाओं को मौत दे रहा है। जमशेदपुर का 13 वर्ष का तंजीर सेल्फी लेते समय 15 फुट रेलिंग से नीचे गिरकर मर गया। एक सेल्फी के शौक ने उसके परिवार की खुशियों को छीन लिया और रह गया जीवन भर का दुःख। हैदराबाद में एक पिता ने मोबाइल पर बहुत फिल्में देखने वाले बेटे कई बार समझाया वह बेटा तो भी नहीं माना तो पिता ने अपने ही बेटे का एक हाथ काट दिया।

लगभग 25 वर्ष पूर्व टेबल, गुणा-भाग हम उंगलियों पर ही गिनकर बता देते थे परन्तु केलकुलेटर की तकनीक ने हमारी स्मरण शक्ति को कमजोर कर दिया। पहले टीवी न होने पर परिवार, सम्बन्धियों, मोहल्लों में एक स्नेह का वातावरण होता था, सामाजिक समरसता थी। आज टीवी ने हमें घरों में बन्द कर दिया फलस्वरूप सामाजिक व्यवहार लगभग समाप्त हो रहे हैं। टीवी के सीरियल्स में आने वाले प्रेम सम्बन्ध, महिलाओं की महिलाओं के विरुद्ध कुटिल चालें, शील और नैतिकता विरुद्ध दृश्य, बच्चों को काल्पनिक दुनिया में ले जाने वाले कॉर्टून ने सम्मोहन सा कर दिया है।

क्या करें -

अपने बच्चों को सुन्दर भविष्य निर्माण के लिये उनके माता-पिताओं को भी अपनी आदतों पर संयम रखना होगा। यदि वे स्वयं बच्चों के सामने मोबाइल का अधिक उपयोग करेंगे, गेम खेलेंगे तो बच्चों को मोबाइल के खतरे से बचाना असंभव होगा।

1. माता-पिता विशेषकर माता बच्चों के सामने सोशल मीडिया का उपयोग बहुत आवश्यकता होने पर ही करें।
2. मोबाइल में किसी प्रकार के हिंसात्मक गेम न रखें।
3. छोटे बच्चों को दूध पिलाते समय मोबाइल का सहारा न लें आपकी यह आदत बच्चों को मोबाइल का एडिक्ट बना देगी। उससे अच्छी बातें करते हुये उसे दूध पिलायें।
4. गर्भवती महिलायें एंड्रायड मोबाइल का प्रयोग न करें।
5. सामान्य गणित को अपने दिमाग से हल करने का प्रयास करें, छोटी-छोटी संख्या के लिये केलकुलेटर /मोबाइल का सहारा न लें ।
6. बच्चों के जिद करने पर अथवा रोने पर मोबाइल देकर बचें नहीं बल्कि उन्हें समझायें। न मानने पर उन्हें रोने दें। बच्चे ये समझते हैं कि रोना उनकी हर इच्छा पूरी करवाने का सर्वोत्तम उपाय है। उन्हें इस बात का एहसास करायें कि उनकी गलत इच्छायें रोने से पूरी नहीं होंगी। मोबाइल और टीवी का उपयोग का समय निर्धारित करें।
7. पढ़ाई के लिये उपयोगी नेट का उपयोग अपने सामने ही करने दें जिससे वे गलत बेबसाइट से बचे रहेंगे।

ये सब प्रयोग तभी सार्थक होंगे जब आप स्वयं अपने बच्चों के सुन्दर और सुरक्षित भविष्य के लिये अपने आप पर संयम रखेंगे।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

जिनशासन की पहेलियाँ

पुद्गल धर्म अधर्म तो देख वस्तु थक जाय।
आकाश नाप ना कर सके कालचक्र चकराय।।1।।

एक योजन मेरा गला, पेट नाप है चार।
गहराई में आठ है, सुनकर करो विचार।।2।।

एक फिल्म ऐसी चले, क्रमशः चौबीस बार।
दृश्य वही, बदले नहीं, माँ से पूछ बताय ।।3।।

तीर्थंकर खुद बन गये, तीर्थंकर के पौत्र।
चक्रवर्ती पद पा लिया, चक्रवर्ती के पुत्र।।4।।

जग में ऐसे स्थान दो हमें बताओ सन्त।
एक घटे ना एक बढ़े कहते श्री अरिहन्त।।5।।

अकृत्रिम ऐसा डिब्बा नहीं खुले कोई दरवाजा।
अनादि सर्वज्ञों ने देखा इसमें बैठे छह बाबा।।6।।

दो हजार वर्ष पहले कौन महापुरुष आया था।
श्रुत स्कन्ध दूजे की रचना करके जो हरषाया था।।7।।

नौ दरवाजे भव्य बन गये, आगे बनता महल विशाल।
कारीगर वह कौन था, जिसके लिये प्राण तत्काल।।8।।

जमकर बैठा थाली जैसा, तीन लोक का पेट हो ऐसा।
गर्भ विराजे तीर्थंकर हैं उनमें पहले सीमन्धर हैं।।9।।

चौपाये से जो नहीं डरता, दो पाये से बचता हो।
अपने में छिपने के कारण गिरि गुफा में रहता हो।।10।।

उत्तर इसी अंक में दिये गये हैं।

REAL GOOD ADVICE

1. Never forget soul; Never kill anybody.
2. Don't forget God; Never tell lie.
3. Always offer prayer to saints; Never steal.
4. Don't leave religious books helter - skelter; Don't eat after Sunset.
5. Always lead a satisfied life; Dont't be possessive and greedy.
6. Always listen to good advice; and do all the above things properly.

NEVER.....NEVER

Never neglet religin.
Never be angry.
Never be obetinate.
Never cheat.
Never be greedy.
Never be unkind.
Never be afaid of anything.
Never be lazy.
Never gamble.
Never beieve and follow wrong principles.
Never speak ill of any body.
Never conceal your faults.

अब नहीं पहनाऊँगी

अरे संस्कृति! सुबह-सुबह कहाँ चली बेटी को लेकर.... जिनमंदिर जा रही हूँ प्रेरणा!

अरे वाह! जिनमंदिर जा रही हो यह तो बहुत अच्छी बात है पर..... पर क्या प्रेरणा ....?

बुरा ना मानो तो एक बात कहूँ .... हाँ हाँ कहो न..... तुम भी कमाल करती हो, दोस्तों में बुरा मानने की बात ही नहीं..

तुम्हारी बेटी ने जो स्लीवलेस कपड़े पहने हैं वे हैं अच्छे नहीं हैं। अरे प्रेरणा! तुम भी क्या पुरानी सोच की बात कर रही हो। आजकल तो इन कपड़ों का फैशन है..

ऐसा फैशन किस काम को जो हमारी संस्कृति को ही नष्ट करे..

तुम भी क्या संस्कृति... और समाज की बात करने लगीं और अरे मेरी बेटी की उम्र ही क्या है मात्र 3 साल..

इसलिये तो कह रही हूँ कि जब तीन साल में हम इन कपड़ों को पहनने के संस्कार देंगे तो बड़े होने पर ये पता-पता नहीं क्या - क्या पहनेंगे..

अच्छा संस्कृति! मुझे एक बात बताओ कि तुम ये चाहती हो तुम्हारी यह बेटी बड़ी हो जाये तो लोग इसके कपड़े देखकर कमेन्ट्स करें... या कोई इसके साथ कुछ ऐसा कुछ करने का प्रयास करे जो हम कभी नहीं चाहते या फिर ये स्वयं ऐसा करे जिससे हमें शर्मिंदा होना पड़े..

अरे प्रेरणा! कौन माँ ऐसा चाहेगी....

फिर हम ऐसे स्लीवलेस कपड़े पहनाकर उनकी सुरक्षा कर रहे हैं कि उन्हें संकट में डाल रहे हैं.....

लेकिन प्रेरणा ! मेरी बेटी बहुत जिद्दी है उसे ऐसे कपड़े ही पसंद आते हैं तो मैं क्या कर सकती हूँ..

बच्चों की जिद के लिये क्या हम उनके भविष्य से खिलवाड़ करें और कल बेटी चांद पर जाने की जिद करेगी तो चांद पर भी ले जाओगी। हम जैसे संस्कार दें बच्चे उसी संस्कार और परिवेश में पलते हैं। बच्चे हमसे ही सब सीखते हैं।

बात तो तुम्हारी संच है प्रेरणा..! पर बहुत कठिन है .....

कठिन और सरल मन का वहम है संस्कृति । आज समाज का माहौल इतना अच्छा नहीं है। रोज इतनी घटनायें बढ़ रहीं हैं और हम वही काम करके घटनाओं को आमंत्रण दें ये कोई

बुद्धिमानी नहीं है। हमें तो सीता, मनोवती और चन्दनबाला के संस्कारों का अनुकरण करना चाहिये, हम तो उस देश के निवासी जहाँ कि वीर महिलाओं ने दूसरे पुरुष की बुरी नजरों से बचने के लिये प्राण तक त्याग दिये। यदि हम उतना नहीं कर सकते तो कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं हम अपने बच्चों को अच्छे और बुरे में अन्तर करना सिखा सकें।

प्रेरणा! तुम्हारी बात बिल्कुल सही है और समझ में भी आ गई है। मैं तो चली।

पर कहाँ संस्कृति....!

घर वापस। बेटी के कपड़े बदलने और आज से प्रतिज्ञा करती हूँ कि आज के बाद ऐसे कपड़े न पहनाऊँगी और न ही खरीदूँगी और न ही किसी को गिफ्ट दूँगी।

वाह संस्कृति! ये हुई न बात।

सहयोग आपका - प्रयास हमारा

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर विगत कई वर्षों से अनेक विधाओं के माध्यम से जिनधर्म के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में समर्पित है। इस कार्य की निरन्तरता हेतु आपका सहयोग सादर आमंत्रित है। आपसे निवेदन है कि आप निम्नरूप से सहयोग प्रदान कर हमें संबल प्रदान करें।

परमशिरोमणि संरक्षक	- 1 लाख	शिरोमणि संरक्षक	- 71,000/-
शंरक्षक	- 51,000/-	परम सहायक	- 31,000/-
सहायक	- 21000/-	विशिष्ट सदस्य	- 11,000/-
सामान्य सदस्य	- 5,000/-		

बैंक विवरण - खाता नाम **आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर,**
पंजाब नेशनल बैंक फव्वारा चौक, जबलपुर **खाता क्र.1937000101026079**
IFS Code - PUNB0193700

संस्था की आगामी योजनाओं में आपका सहयोग आमंत्रित

बाल एवं युवा वर्ग में जिनधर्म की सामग्री तैयार करने के क्रम में जिनधर्म की प्रेरणादायक कहानियों की एक नवीन वीडियो सीडी **"जिनधर्म के गौरव"** बनाने की योजना है। इस वीडियो में 10-10 मिनिट की 6 कहानियाँ होंगीं। जिसे विभिन्न कुशल कलाकारों के अभिनय के माध्यम से तैयार किया जायेगा। इस कार्य में लगभग 3 लाख रुपये अनुमानित व्यय होगा। दूसरी प्रस्तुति के रूप में **"ये धर्म हमारा है"** एक वीडियो सीडी तैयार की जा रही है। इसके अन्तर्गत जिनागम के सिद्धान्तों पर आधारित कहानियों को पपेट के माध्यम से वीडियो तैयार किया जायेगा। इसकी अनुमानित लागत राशि लगभग 1 लाख होगी।

सहयोग के इच्छुक साधर्मी 9300642434 पर सम्पर्क करें ।

समाचार

कोटा में आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन का मंगल उद्घाटन समारोह सम्पन्न

देश की शैक्षणिक नगरी के नाम से विख्यात राजस्थान के कोटा में आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन का मंगल शुभारम्भ हुआ। कोटा के अतिशय क्षेत्र केशोरायपाटन रोड पर गिरधरपुरा में श्री प्रेमचन्द जैन चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम में शास्त्री स्तर का महाविद्यालय विगत 10 वर्षों से संचालित हो रहा है। अब इसी परिसर के नवीन भवन में आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन का संचालन प्रारम्भ हुआ है। इस विद्यालय में कक्षा आठवीं से दसवीं तक के छात्रों को अंग्रेजी माध्यम से निःशुल्क अध्ययन की सुविधा प्रदान की जायेगी। इसके पश्चात् शास्त्री पाठ्यक्रम करने के इच्छुक छात्रों को विशेष सुविधायें प्रदान की जायेंगी।

दिनांक 28 फरवरी से 2 मार्च तक आयोजित इस कार्यक्रम में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। साथ ही डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित अनिल शास्त्री भिण्ड, डॉ.संजीव गोधा जयपुर, श्री विराग शास्त्री जबलपुर, पण्डित सौरभ शास्त्री इंदौर, पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री कोटा के आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। विधान का मंगल आयोजन श्री संजय शास्त्री मंगलायतन के कुशल नेतृत्व में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्वानों और देश के अनेक श्रेष्ठियों द्वारा छात्रावास के विभिन्न कक्षों का उद्घाटन संपन्न हुआ। आश्रम के विशाल नवीन द्वार का लोकार्पण किया गया। इस द्वार के ऊपर आचार्य कुन्दकुन्द, पण्डित टोडरमलजी और आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी की पाषाण की प्रतिकृतियाँ विराजमान की गईं। अंतिम दिन आचार्य धरसेन सिद्धान्त महाविद्यालय में शास्त्री अध्ययन पूर्ण करने वाले छात्रों का दीक्षांत समारोह गरिमापूर्ण वातावरण में आयोजित हुआ।

ज्ञातव्य है कि श्री प्रेमचन्दजी बजाज की पवित्र भावना और पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री के कुशल निर्देशन, प्राचार्य श्री धर्मेन्द्र शास्त्री, अधीक्षक द्वय श्री सौरभ शास्त्री और श्री अभिनय शास्त्री के समर्पण के फलस्वरूप यह संस्थान निर्बाध रूप से संचालित हो रहा है।

सुरेन्द्र नगर में अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

गुजरात के सुरेन्द्रनगर में फागुन माह का अष्टान्हिका महापर्व दिनांक 22 फरवरी से 1 मार्च तक सानन्द उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। स्थानीय श्री दिगम्बर जिनमंदिर में आयोजित इस महापर्व के उपलक्ष्य में प्रतिदिन प्रातः श्री चौंसठ ऋद्धि मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी का सीडी प्रवचन हुआ। इसके बाद प्रतिदिन प्रातः और रात्रि में जबलपुर से पधारे विद्वान द्वय ब्र. श्रेणिकजी और श्री विराग शास्त्री के मंगल व्याख्यानों का लाभ मिला।

समाचार

हमारे नये परम शिरोमणि संरक्षक

बाल एवं युवा वर्ग में जैनत्व के संस्कारों को प्रेषित करने के उद्देश्य से किये जा रहे सार्थक प्रयासों से प्रभावित होकर **डॉ. उज्ज्वला शहा** और **पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई** ने आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर के परम शिरोमणि संरक्षक के रूप में अपनी स्वीकृति प्रदान की; एतदर्थ संस्था द्वारा हार्दिक आभार।

ज्ञातव्य है आप दोनों देश के प्रसिद्ध करणानुयोग विशेषज्ञ हैं। विगत 25 वर्षों से व्यापार आदि से पूर्णतः निवृत होकर जिनागम का गहन अध्ययन कर रहे हैं साथ ही समाज के आमंत्रण पर देश-विदेश में करणानुयोग और द्रव्यानुयोग की विशेष कक्षाओं के माध्यम से जिनशासन की अनवरत निष्काम सेवा कर रहे हैं।

बाल शिविरों में वितरण के लिये बाल गीत वीडियो सीडी और साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध

ग्रीष्मकालीन अवकाशों में देश के अनेक नगरों में बाल संस्कार शिविरों का आयोजन किया जाता है और इसमें बच्चों के प्रोत्साहन के लिये अनेक तरह का उपहार दिया जाता है। आप लौकिक वस्तुयें न देकर उन्हें जिनधर्म में प्रेरित सामग्री वितरित कर सकते हैं। आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन द्वारा बाल संस्कार प्रेरक अनेक प्रकार की वीडियो सीडी और साहित्य उपलब्ध है। जिसकी सूची संलग्न है। शिविरों में वितरण के लिये सभी प्रकार की सीडी /साहित्य 35 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है।

आप हमसे 9300642434 पर सम्पर्क कर ये सामग्री मंगा सकते हैं।

बाल संस्कार वीडियो अब पेन ड्राइव में उपलब्ध

संस्था द्वारा निर्मित वीडियो गीत/ कहानियाँ और कवितायें अब पेनड्राइव में भी उपलब्ध हैं। 16 जीबी की पेन ड्राइव में 16 घंटे का वीडियो सीडी का समावेश किया गया है। यह पेन ड्राइव 500 रुपये में उपलब्ध है। डाक व्यय 50/-

चहकती चेतना पत्रिका बाजार में मिलने वाली
अभक्ष्य चीजों के सन्दर्भ में सदैव आपको सावधान करती रही है।
इससे आप पाप से तो बचते ही हैं
साथ ही आपके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ता।

यह तीन चित्र ही आपको स्वयं ही बता रहे हैं कि इन वस्तुओं को खायें या नहीं...

कैण्डी में छिपकली

डेरी मिल्क चॉकलेट में कीड़े

ऐसे बनते है गोलगप्पे

BEAGLES ARE BLINDED, MUTILATED & HACKED APART BY JUNK SCIENTISTS...for products we do not need...and this happens with so many animals of other species too...and not everyone knows about it and what we can do...so we need to share to make them aware....so we can stop their being used, abused and murdered by the cruel and heartless paid by corporations...and make sure to also keep withholding your money from these torturers...if you want to make sure any other companies you buy from do not test, do the research online, before you make any purchases...or ask when you are at point of purchase, so they know it matters....DO NOT BUY ANYTHING THAT HARMS ANIMALS, BOYCOTT THEIR TERRORISM... Animal Freedom Fighter

जन्मदिवस की शुभकामनायें

जन्ममरण के अभाव की भावना में ही, जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

आर्जव अपना धर्म है आर्जव अपना काम।
जिनधर्म की संस्कृति, हो भव का अवसान।।

आर्जव संजीव गोधा, जयपुर राज. 5 मार्च 2018

शब्दों से **गाथा** बने, गाथा से हो ग्रन्थ।
यही भावना जन्म दिवस पर, पंथ ग्रहो निर्ग्रन्थ।।

गाथा सौरभ जैन, इंदौर 7 अप्रेल 2018

आप्त हमारे शीष पर, भव का होय अभाव।
जिनशासन की सौरभ से, मिले मुक्ति की नाव।।

आप्त सौरभ जैन, कोटा 27 अप्रेल 2018

ईर्या जिनशासन करे, सब संकट आसान।
जीवन पथ अति सरल हो, होय जगत कल्याण।।

ईर्या विराग जैन, जबलपुर 27 अप्रेल 2018

आगम से अति प्रेम हो, आतम से **अनुराग** ।
जन्म मरण का अन्त हो, उर में रहे विराग ।।

आगम अनुराग जैन 30 मई 2018

देव-शास्त्र-गुरु पर, हो सांचा **श्रद्धान**।
जन्म दिवस पर यही भावना, हो अरिहन्त समान।।

श्रद्धान अरिहन्त चौधरी, किशनगढ़ राज. 19 जून 2018

पीने को मिला गंदा पानी

प्यारे बच्चों! यह महान जैन धर्म हमें महापुण्य के उदय से मिला है। इतने बड़े विश्व में भारत में जन्म लेना और भारत में भी उत्तम स्थान, जैनधर्म के साथ अच्छा परिवार और जिनेन्द्र दर्शन मिलना आसान बात नहीं है। इतना सब मिलने के बाद भी हम जिनधर्म के संस्कारों के विपरीत जीवन जियें यह कोई अच्छी बात नहीं है।

इन चित्रों में इन बच्चों के जीवन को देखिये, कितने संघर्ष में इनका जीवन कैसे बीतता होगा ...? जरा सोचना ! कहीं हमारा जीवन भोग विलास, अभक्ष्य भक्षण में न चला जाये..।

रोटी तो मिली नहीं,
चूल्हे में ही जाकर बैठ गये ।

रहने को घर नहीं

जो मिला सो खा लिया

पेट में दाना नहीं, पर आँखों में प्रेम

सोने को बिस्तर नहीं